14/3/11

लकड़ी, पानी कम इस्तेमाल सांझी होली और गुलाल

फरीदाबाद, जासकें : होली के नजदीक आते ही लोगों में अलग सा ही उल्लास नजर आने लगता है। होली मनाने के लिए रंगों के इस्तेमाल की भी तैयारी शुरू हो जाती है। होली के मौके पर बहुत से लोग लकड़ी व पानी का बहुत इस्तेमाल करते हैं। समाज का बुद्धिजीवी वर्ग खासकर पर्यावरण संरक्षण में जुटे समाजसेवी इस बात को लेकर चिंतित है कि अगर ऐसे ही हालत रहे और पर्यावरण व जल संरक्षण को लेकर गंभीरता नहीं बरती गई तो सामाजिक व्यवस्था बिगड़ सकती है।

होली पर जल का व्यर्थ इस्तेमाल तथा पेड़ों की कटाई पर्यावरण की दृष्टि से जहां नुकसानदायक है, वहीं इससे राष्ट्रीय क्षति भी होती है। होली जलाने के लिए सैकड़ों पेड़ों की बलि दे दी जाती है, जो हमें जीवनदायिनी आक्सीजन देते हैं। दैनिक जागरण ने लकड़ी पानी कम इस्तेमाल, सांझी होली और सूखा गुलाल के संदेश के साथ पर्यावरणविदों से बातचीत की तो उन्होंने समाज को जागरूक होने पर जोर दिया।

पर्यावरण संरक्षण समिति के अध्यक्ष **पीके.मित्तल** कहते हैं कि जैसे-जैसे लोगों के पास धन बढ़ा है, दिखावा भी बढ़ा है। इसलिए जगह-जगह लकड़ी को जलाया जाने लगा है, हालांकि होली के मौके पर लकड़ी को सांकेतिक रूप से भी जलाया जा सकता है। यज्ञ आदि करके भी आस्था को प्रकट किया जा सकता है। गांवों में तो कई जगह उपले जलाए जाते हैं, लेकिन शहरों में कुछ लोग कोयला भी जला लेते हैं। इससे वातावरण प्रदूषण होता है। पेड़ भी कम होते जाते हैं। लोगों को जागरूक होने की जरूरत है। कम से कम लकड़ी जलाएं, इससे पर्यावरण सुरक्षित रहेगा।

विभिन्न सेक्टर एरिया की 80 आरडब्ल्यूए की संस्था कंफडरेशन आफ आल रेजीडेंटस एसोसिएशन के चेयरमैन **एनके.गर्ग** बताते हैं कि पर्यावरण संरक्षण के लिए आज तिलक लगाकर होली मनाने की जरूरत है। एक वक्त था जब सिर्फ सद्भाव के मकसद से ही होली का त्योहार मनाया जाता था। आजकल दिखावा बढ़ गया है। इसलिए लोग होली की गरिमा को ही भूल गए हैं। पिछले आठ, दस सालों में वजूद में आई 80 आरडब्ल्यूए से गर्ग साहब जुड़े हैं। वे कहते हैं कि जैसे-जैसे आबादी बढ़ी है, वैसे-वैसे पानी तथा लकड़ी भी व्यर्थ इस्तेमाल की जाने लगी है। सेक्टर-आठ निवासी एनके.गर्ग कहते हैं कि उनका प्रयास रहेगा कि सभी आरडब्ल्यूए के पदाधिकारी एक ही जगह पर मिलकर होली मनाएं। जिले के 80आरडब्ल्यूए का होली पूजन समारोह एक जगह मनाया जाएगा तो इससे एकजुटता बढ़ेगी और अन्य लोगों को भी पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा मिलेगी।

एन.के.गर्ग

पी.के.मित्तल

पर्यावरणविदों और बुद्धिजीवियों की राय

- लकड़ी जलने से प्रभावित होगा पर्यावरण
- जिले के 80 आरडब्ल्यूए का होली पूजन समारोह एक जगह मनाया जाएगा

फूलों वाली होली से दिया प्यार का संदेश

फरीदाबाद, जासंकें : नंद गांव के कोमर कन्हैया लाल, बरसाने की राधा गोरी रे रसिया, कैसो चटक रंग डालो रे, मेरी चुनर में पड़ गयो दाग रे। इन्हीं होली गीतों की प्रस्तुति के साथ शहर में जगह-जगह फूलों की होली खेली गई।

शहर में रविवार को जगह-जगह फूलों वाली होली कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पांच नंबर स्थित श्री राधा सर्वेश्वर मंदिर में आयोजित फूलों की होली कार्यक्रम में मुनि जी महाराज ने होली गीतों से कार्यक्रम के आकर्षण को बढ़ा दिया। वृंदावन, बरसाना से आई मंडलियों ने गायन व नृत्य से श्रद्धालुओं को झूमा दिया। शालिनी शर्मा, शैफाली शर्मा, मीनाक्षी शर्मा, एकता शर्मा, अंजू शर्मा ने नृत्य व होली गीतों से छाप छोड़ी।

दीपक नृत्य तथा चरकुला नृत्य भी आकर्षण का केंद्र रहा। शालिनी शर्मा ने समझ ले बात, मलेगी हाथ, चुनरिया रह जाएगी खोरी, आओ फागुन मास खेल तूं रसिया होरी गीत प्रस्तुत किया तो श्रद्धालुओं ने भी शालिनी का साथ दिया। कार्यक्रम में नगर निगम महापौर अशोक अरोड़ा तथा विधायक आनंद कौशिक बतौर विशिष्ट अतिथि मौजूद थे। उधर होली मिलन समिति, सेक्टर-22-23 ने भी सेक्टर-22 के मैदान में होली मिलन समारोह का आयोजन किया। समारोह में राधा-कृष्ण तथा शिव-पार्वती की झांकियों ने मनमोह लिया।